विद्युत दर्पण

पश्चिम क्षेत्रीय विद्युत समिति

गृह पत्रिका

अंक - 19 जनवरी - मार्च 2011

सम्पादकीय

भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग की ओर से 'ख' क्षेत्र के केन्द्रीय कार्यालयों में वर्ष 2009-10 के दौरान राजभाषा नीति के उत्कृष्ट कार्यान्वयन तथा हिन्दी में किए गए श्रेष्ठ कार्य निष्पादन के लिए पक्षेविसमिति को द्वितीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया । सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों के सांघिक प्रयास से यह सफलता प्राप्त हुई है । मैं सभी को हार्दिक बधाई देता हूँ ।

अपने कर्तव्य के प्रति निष्ठावान रहें तो लक्ष्य प्राप्ति होती ही है । अलौकिक प्रतिभा के धनी स्वामी विवेकानंदजी के शब्दों में ''हमें किसी भी परिस्थिति में अपने लक्ष्य से भटकना नहीं चाहिए । स्वामी विवेकानंदजी के उत्साही, ओजस्वी एवं अनंत ऊर्जा से भरपूर विचार हमें प्रेरणा देते रहेंगे । सन् 1893 में शिकागो में विश्व धर्म सम्मेलन में अपने भाषण की शुरूआत 'बहनो और भाइयों' कहकर करके उन्होंने अपनी वाणी से भारतीय संस्कृति का प्रमाण दिया । 12 जनवरी को उनके जन्म दिन पर उन्हें शतश: प्रणाम ।

अपने विचारों की अभिव्यक्ति के लिए वाणी एक सशक्त माध्यम है । मधुर वाणी से हम अपनी बात कहें वह अधिक प्रभाव डालती है । 14 जनवरी को (पौष माह में) सूर्य की उत्तरायण गति आरम्भ होने के दिन मनाये जाने वाले मकर संक्राति का त्यौहार भी यही कहता है ; 'तिल गुड़ लीजिए, मीठा बोलिये' ।

भारतीय समाज में रिश्तों को जुड़े रखने में महत्वपूर्ण भूमिका महिलाओं की! 8 मार्च को अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिन मनाया जाता है । हालांकि महिलाओं द्वारा अपने अधिकार पाने के लिए किए गए संघर्ष का यह एक नतीजा है, लेकिन भारतीय संस्कृति में नारी का श्रेष्ठ स्थान आरम्भ से ही है । इसीलिए तो खुद कष्ट सहकर फसल देने वाली धरती को हम धरती माता कहते हैं और हमारे देश को हम अभिमान से 'भारत माता' कहते हैं ।

बात दार्शनिक हो या अध्यात्मिक, धार्मिक हो या सामाजिक मधुर वाणी से कहें तो असर जरूर करेगी ।

(मनजीत सिंघ)
सदस्य सचिव

अध्यक्ष, केविप्रा, नई दिल्ली का बधाई संदेश

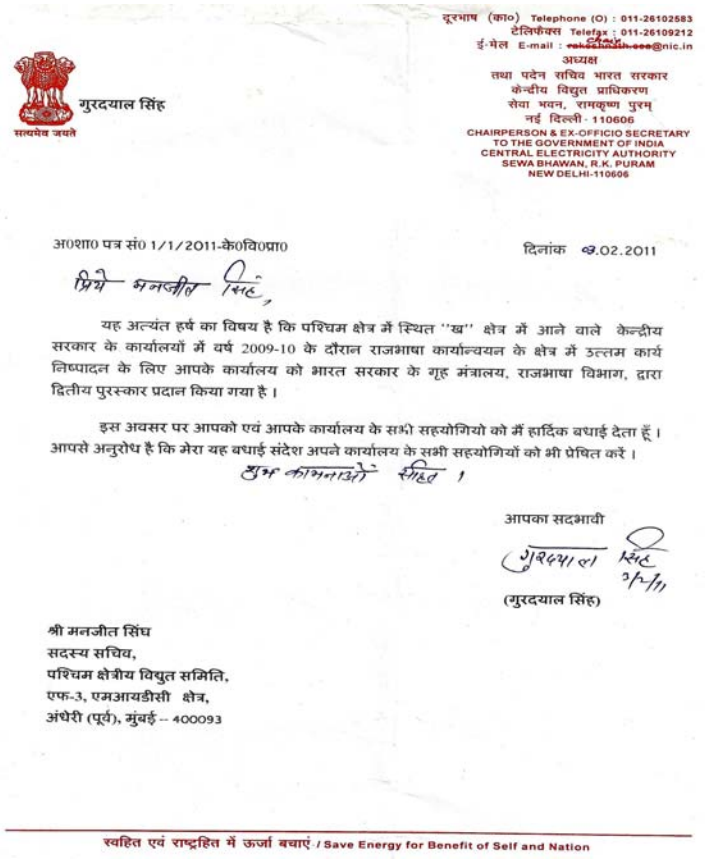

गुरदयाल सिंह
सत्यमेव जयते

दूरभाष (फाक्स) Telephone (O) : 011-26102583
टेलिफैक्स Telefax : 011-26109212
ई-मेल E-mail : [redacted]@nic.in
अध्यक्ष
तथा पदेन सचिव भारत सरकार
केन्द्रीय विद्युत प्राधिकरण
सेवा भवन, रामकृष्ण पुरम्
नई दिल्ली - 110606
CHAIRPERSON & EX-OFFICIO SECRETARY
TO THE GOVERNMENT OF INDIA
CENTRAL ELECTRICITY AUTHORITY
SEWA BHAWAN, R.K. PURAM
NEW DELHI-110606

अ0शा0 पत्र सं0 1/1/2011-के0वि0प्रा0 दिनांक 03.02.2011

प्रिये मनजीत सिंह,

यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि पश्चिम क्षेत्र में स्थित ''ख'' क्षेत्र में आने वाले केन्द्रीय सरकार के कार्यालयों में वर्ष 2009-10 के दौरान राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में उत्तम कार्य निष्पादन के लिए आपके कार्यालय को भारत सरकार के गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग, द्वारा द्वितीय पुरस्कार प्रदान किया गया है ।

इस अवसर पर आपको एवं आपके कार्यालय के सभी सहयोगियों को मैं हार्दिक बधाई देता हूँ । आपसे अनुरोध है कि मेरा यह बधाई संदेश अपने कार्यालय के सभी सहयोगियों को भी प्रेषित करें ।

शुभ कामनाओं सहित ,

आपका सदभावी

गुरदयाल सिंह 3/2/11

(गुरदयाल सिंह)

श्री मनजीत सिंघ
सदस्य सचिव,
पश्चिम क्षेत्रीय विद्युत समिति,
एफ-3, एमआयडीसी क्षेत्र,
अंधेरी (पूर्व), मुंबई -- 400093

स्वहित एवं राष्ट्रहित में ऊर्जा बचाएं / Save Energy for Benefit of Self and Nation

गोवा के राज्यपाल महामहिम श्री एस.एस.सिद्धू जी के कर कमलों से पुरस्कार ग्रहण करते हुए श्री मनजीत सिंघ, सदस्य सचिव,पक्षेविस

राजभाषा समाचार

हार्दिक बधाई

- श्रीमती तरूप्रभा शैल की पक्षेविसमिति, मुंबई के हिन्दी अधिकारी के पद पर दिनांक 11 जनवरी 2011 को प्रतिनियुक्ति पर नियुक्ति हुई है । हार्दिक अभिनन्दन ।

- भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग की ओर से 'ख' क्षेत्र के केन्द्रीय कार्यालयों में वर्ष 2009-10 का राजभाषा द्वितीय पुरस्कार दिनांक 21.02.2011 को गोवा में आयोजित राजभाषा सम्मेलन में गोवा के राज्यपाल महामहिम श्री एस.एस.सिद्धू जी के करकमलों श्री मनजीत सिंघ, सदस्य सचिव, पक्षेविसमिति ने ग्रहण किया ।

- राजभाषा कार्यान्वयन समिति की 93 वीं बैठक श्री मनजीत सिंघ, सदस्य सचिव की अध्यक्षता में दिनांक 18.01.2011 को सम्पन्न हुई ।

- 'वेतन से संबंधित आयकर' विषय पर दिनांक 29.03.2011 को कार्यालय में आयोजित हिन्दी कार्यशाला में श्री शेष कुमार सावंत, उ.श्रे.लि. ने व्याख्यान दिया । पक्षेविसमिति के 8 अधिकारी, 14 कर्मचारियों एवं क्षेत्रीय विद्युत समिति कार्यालय के 1 अधिकारी एवं 1 कर्मचारी तथा क्षेत्रीय निरीक्षण संगठन के 2 कर्मचारियों ने इस कार्यशाला का लाभ उठाया ।

तकनीकी समाचार

शहरी क्षेत्रों को विद्युत वितरण के लिए पारेषण में ऊर्जा की क्षति कम हो इसके लिए यह आवश्यक है कि लोड सेंटर में विद्युत उपकेन्द्र लगाये जायें । शहरी क्षेत्र में जमीन की कीमतें अधिक होने के कारण खुले उपकेन्द्र लगाने हेतु जमीन मिलना मुश्किल होता जा रहा है । विद्युत प्रदाय एवं उपकेन्द्रों की लागत में समन्वय रखने के लिए पक्षेविसमिति की दिनांक 12.02.2011 को संपन्न हुई 16 वीं बैठक में समिति ने 400 / 220 कि.वो.के जीआईएस विद्युत उपकेन्द्र शहरी क्षेत्र के निकट लगाने की संस्तुति की ।

विश्वास

ए क छोटी बच्ची को अपने पिता के साथ नदी पर बने एक संकरे पुल से गुजरना था। पिता ने बच्ची से कहा तुम मेरी उंगली पकड़ लो । उस पर बच्ची ने कहा, नहीं पिता जी आप मेरी ऊँगली पकड़िये । पिता ने कहा, दोनों में क्या फर्क है ? एक ही तो बात है ! बच्ची ने कहा, फर्क है । यदि पुल पर चलते हुए कोई संकट आए तो हो सकता है, मैं आपकी ऊँगली छोड़ दूँ , लेकिन ऐसे में मुझे विश्वास है, आप मेरी ऊँगली नहीं छोड़ेंगे ।

''जाकी रही भावना जैसी----''

अयोध्या में अभूतपूर्व उत्साह का वातावरण था । महिलाओं ने अपने घर के आंगन में ही नहीं बल्कि रास्तों पर भी रंगोलियाँ सजायी थी । फूलमालाओं, पताकाओं से घर, मंदिर सजे थे । अयोध्या नगरी श्री राम जी के आगमन की खुशी में दुल्हन की तरह सजाई गई थी । ऐसा लग रहा था जैसे सभी त्यौहार एक ही दिन में मनाये जा रहे हों । हर किसी के चेहरे पर प्रसन्नता थी । कारण ही कुछ ऐसा था! उनके परमपूज्य श्री राम प्रभु सीता माता को लंका से रावण का वध करके वापिस ले आये थे । इसी का विजयोत्सव मनाया जा रहा था ।

श्री हनुमान जी के आनन्द की कोई सीमा नहीं थी । इसी तरह वह खुशी से उछलते हुए एक मंदिर के पास से गुजर रहे थे । मंदिर में सत्संग चल रहा था । श्रोतागण तल्लीन होकर सुन रहे थे । कथावाचक लंका में दु:खी सीता माता का वर्णन कर रहे थे । ''----------सीता माता निराशा से घिरी अशोक वृक्ष के नीचे बैठी थी । आस-पास के पौधों पर सफेद फूल खिले हुए थे । श्री राम से वियोग की वेदना सीता माता के तेजस्वी चेहरे पर साफ नज़र आ रही थी । यह बात सुनते ही हनुमानजी मंदिर में आकर कथावाचक से कहने लगे कि फूल लाल रंग के थे । कथावाचक मानने को तैयार नहीं था । हनुमान जी भी अपनी बात पर अड़े रहे । लोगों ने बीच-बचाव करते हुए सलाह दी कि सीता माता से पूछ लीजिए ।

हनुमान जी कथावाचक के साथ सीता माता के पास गए और सारी बात बतायी । सीता माता ने कहा कि वहाँ फूल न तो सफेद थे और न ही लाल । फूल तो काले रंग के थे । यह सुनकर हनुमान जी आश्चर्य में पड़ गए । सोचने लगे मैं स्वयं तो सीता माता को ढूँढते हुए लंका गया था । सारा दृश्य मैंने अपनी आँखों से देखा । सीता माता तो कभी असत्य नहीं कहती, फिर आज ऐसा क्यों कह रही है ?

इतने में श्री राम जी वहाँ पधारे । उन्होंने पूछा किस बात पर बहस हो रही है ? उस पर हनुमान जी ने सारी घटना श्री राम जी को बताई और कहा कि अब आप ही न्याय कीजिए । श्री राम जी ने मंद-मंद मुस्कुराते हुए कहा, ''लंका में जिस अशोक वृक्ष के नीचे सीता हताश होकर बैठी थी, उसके आस-पास सफेद रंग के ही फूल खिले थे । कथावाचक ठीक ही कह रहा है परन्तु प्रिय हनुमान तुम भी गलत नहीं हो । तुम ने जब वहाँ अपनी सीता माता को निराश और दु:खी देखा तो तुम्हारे मन में रावण के प्रति क्रोध भड़क उठा और तुम्हें उस क्रोध के अंगारों में सफेद फूल भी लाल दिखाई दे रहे थे और सीता अपनी अवस्था पर ग्लानि महसूस कर रही थी । वियोग में उन्हें समस्त सृष्टि रंगहीन नज़र आ रही थी । निराशा इस तरह उनके मन-मस्तिष्क पर छाई थी कि उन्हें सफेद फूल भी काले नज़र आ रहे थे ।''

तात्पर्य: *हमारी सोच, हमारा दृष्टिकोण और हमारे मन की भावनाएँ जैसी होती हैं, हमें सब कुछ वैसा ही नज़र आता है ।*

* * *-* * *